## कवि-परिचय

**नाम** : कारू गोप

**जनम-तिथि** : 2.2.1939

**जनम-अस्थान** : कोनंदपुर, पकरीबरावाँ, नवादा

**सिच्छा** : स्नातक, साहित्यालंकार, आयुर्वेदाचार्य

ई राजकीयकृत मध्य विद्यालय अंधरवारी, रजौली से सेवा निवृत्त सिच्छक हथ आउ आज भी, सिच्छा, चिकित्सा जन परिजन के सेवा, मगही आउ हिन्दी के सेवा कर रहलन हे। ई संगीत, लोक नृत्य, अभिनय, वाद्य, कुस्ती-कला आउ योग में भी परवीन हथ। इनकरा ढोलवादन, लोक नृत्य, कीर्त्तन, योग सेवा ला कइएक जगह से पुरस्कृत आउ सम्मानित कैल गेल हे। इनकर रचना हरि-संकीर्त्तन, फुलंगी के खोंचा, ज्ञान गीत माधुरी, जय जीव ज्ञान, गीत माला आदि हे।

'अपना के पहचानऽ' सीर्सक कविता में ई नारी समाज के जागेला आह्वान कयलन हे। मगही संस्कृति में नारी के ऊँचा स्थान देल गेल हे।

ई कविता में ऊ बता रहलन हे कि नारी समुदाय जागऽ आउ अपना के पहचानऽ। तू सिरजन के देवी हऽ। अमृत तोरे नाभि में हे। धारत के परकीरती के चान-सुरुज के ईंजोरिया आउ किरिंग तू ही हऽ। तोर अधिकार हे कि गार्गी बनऽ। अप्पन अधिकार ला सिंगार पटार छोड़ के अत्याचार के खिलाफ खड़ा हो के धरती पर फिन स्वर्ग उतार दऽ।

## अपना के पहचानऽ

हे नारी समुदाय जागऽ,
अपना के पहचानऽ।
तू तो हऽ सिरजन के देवी,
हम देवा ई जानऽ।।

भूल-भुलइया देवी मइया
के तू भूल भजऽ हऽ।
अपने अन्दर योग से देखऽ,
हिरना नाभि तजऽ हऽ।।
अमृत तोहरे अन्दर झलकइ,
तोहरे हइ सब जानऽ।।

दुनिया के लफ्फाबाजी में
फँस के सत्य भुलइलऽ।
देवा-देवी नकली गाथा
में बुड़ ग्यान गँवइलऽ।।
काहे नय अपना के परखऽ
भीतर पइठ धेयानऽ।।

गत्तर भारत ताके भरमित,
आडंबर में नाचे।
ऊँच-नीच, भय, भ्रम में डूबल
अलगे पोथी बाँचे।।
सुरुज एक दिन-रात होवऽ हे
आउ इँजोरिया छानऽ।।

चीन्हऽ अपना के तू पहिले,
एकरे में हे देरी।
हक, अधिकार, न्याय, प्यार से
दे दऽ फिन इक घेरी।।
धरती पर फिन स्वर्ग उतारऽ
गार्गी भारती मानऽ।।

करइ न अत्याचार कोय अब,
कभी न परके दऽ।
नकली टिकुली साट के खाली
गल्ली न टहले दऽ।।
'गोप' गुरु ला ग्यान टिकुलिया
साटऽ आउ कुछ तानऽ।।

## अभ्यास-प्रस्न

**मौखिक :**

1. कवि के परिचय दऽ आउ इनकर दूगो रचना के नाम बतावऽ।
2. अपना के पहचानेला ई केकरा कह रहलन हे?
3. नारी सिरजन के देवी कइसे हे?
4. 'आडंम्बर में नाच रहल हे' के मतलब का हे?
5. धरती पर फिर सरग कइसे उतारल जा सकऽ हे?

**लिखित :**

1. अपना के पहचानऽ कविता के भाव संछेप में लिखऽ।
2. आज नारी के विकास कइसे हो सकऽ हे?
3. अतीत में हम्मर देस में नारी के का स्थान हल?
4. नारी के हक आउ अधिकार लेवेला का करे पड़त?
5. नीचे लिखल पद्यांस के भावार्थ लिखऽ।

   नकली टिकुली साट के खाली
   गल्ली न टहले दऽ।
6. नीचे लिखल पद्यांस के भावार्थ लिखऽ।

   अपने अंदर योग के देखऽ,
   हिरना-नाभि तजऽ हऽ।
   अमृत तोहरे अंदर झलकइ,
   तोहरे हइ सब जानऽ।

7. कविता के भाव आउ सिल्प सौंदर्य बतावऽ।

**भासा-अध्ययन :**

1. कविता में आयल तत्सम सबद के चुन के ओकर अरथ लिखऽ।
2. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ :
   योग, सुरुज, ग्यान, भ्रम, समुदाय
3. नीचे लिखल उपसर्ग से एक-एक सबद बनावऽ :
   ऊ, अन्न, ई आ, भू, भर
4. नीचे लिखल सबद के भाव बतावऽ :
   हिरना-नाभि, सृजन देवी, ज्ञान टिकुलिया, भ्रम में डूबल, इँजोरिया छानऽ
5. ई कविता से तीन गो मुहावरा चुन के ओकर अर्थ बतावऽ आउ वाक्य में परयोग करऽ।
6. कविता में कउन-कउन अलंका आयल हे ? उदाहरन देके बतावऽ।

**योग्यता-विस्तार:**

1. 'अपना के पहचानऽ' सीर्सक कविता से मिलइत-जुलइत भाव से संबंधित एगो रचना चुन के लावऽ आ कलास में सुनावऽ।
2. ''नारी उत्पीड़न'' पर कलास में एगो परिचर्चा करऽ।

**सब्दार्थ :**

| | | |
|---|---|---|
| सिरजन | — | निरमान |
| लफ्फाबाजी | — | हवा में कैल बात |
| इँजोरिया | — | चाँदनी रात |

●